Central University of Himachal Pradesh
(ESTABLISHED UNDER CENTRAL UNIVERSITIES ACT 2009)
Dharamshala, Himachal Pradesh-176215

NAAC Criterion-I

Key Indicator – 1.3.2

List of Value added course which are optional and offered outside the curriculum of the programs and course content

1.3.2 Evidences

Department of Hindi

Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala, Kangra

INDEX

Department of Hindi

S. No.	DESCRIPTION	Page No.
1	List of value added Courses which are optional and offered outside the curriculum of the programs	1
2	Brochure and Course content or syllabus along with course outcome of Value added courses	2-11

हिंदी विभाग के मूल्य वर्धित पाठ्यक्रम
(Value-added Courses)

सत्र 2017-18

क्रम संख्या	पाठ्यक्रम नाम	पाठ्यक्रम कूट संकेत	विद्यार्थियों की कुल संख्या
1.	Sahitya aur Vyaktitva Vikas	HIL 453	10
2.	Sahitya aur Manveey Moolya	HIL 458	10
3.	Hindi ka Lokpriya Sahitya	HIL 450	28

सत्र 2019 -20

क्रम संख्या	पाठ्यक्रम नाम	पाठ्यक्रम कूट संकेत	विद्यार्थियों की कुल संख्या
1.	Hindi ka Lokpriya Sahitya	HIL 450	15

विभागाध्यक्ष (हिंदी)

विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
धौलाधार परिसर-1, धर्मशाला-176215

Scanned by Scanner Go

हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
पो। बाक्स : 21, धर्मशाला, जिला-काँगड़ा, हिमाचल प्रदेश -176215
www.Cuhimachal.Ac.in

पाठ्यक्रम शीर्षक : साहित्य और व्यक्तित्व विकास **श्रेयांक- 2**
पाठ्यक्रम कूट-संकेत: एच.आई.एल.453 (HIL 453)

व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे, प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य, ट्यूटोरियल, शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों/ कार्य के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतंत्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य/ वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोधपत्र लेखन, सेमिनार, प्रबंधलेखन इत्यादि के 15 घंटे के समान है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य- साहित्य मानव मन की कलात्मक अभिव्यक्ति है। जिसमें मानव के विकास का सम्पूर्ण इतिहास समाहित होता है। हमारे जीवन में साहित्य की आवश्यकता निरन्तर बनी रहती है। साहित्य की यह आवश्यकता ही हमारे जीवन एवं समाज में युगांतकारी परिवर्तन का माध्यम बनती है। मानव जीवन के कल्याण में साहित्य की महती भूमिका रही है। मानव का सम्पूर्ण चरित्र उसके व्यक्तित्व के द्वारा प्रदर्शित होता है। इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य साहित्य के महत्त्व को प्रदर्शित करना है तथा वह किस प्रकार मानव जीवन के व्यक्तित्व विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस सभी बिन्दुओं से छात्रों को परिचित कराना है।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcome) –

*व्यक्तित्व की अवधारणा का परिज्ञान |

*साहित्य की सहायता से मानव व्यक्तित्व का निर्माण |

*साहित्य और व्यक्तित्व विकास के विभिन्न अवयवों से परिचय |

*व्यक्तित्व विकास के विविध आयामों से परिचय |

उपस्थिति अनिवार्यत: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है। न्यूनतम 75 % कक्षाओं में उपस्थिति दर्जा न होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है।

पाठ्क्रम विषयवस्तु –

इकाई-1 व्यक्तित्व का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

- व्यक्तित्व का अर्थ
- व्यक्तित्व की परिभाषाएं
- व्यक्तित्व का स्वरूप

इकाई-2 व्यक्तित्व के निर्धारक तत्त्व तथा विशेषताएं

- व्यक्तित्व के निर्धारक तत्त्व- जैविक, मनोवैज्ञानिक, पर्यावरणीय कारक
- व्यक्तित्व की विशेषताएं

इकाई-3 साहित्य और व्यक्तित्व का विकास

- साहित्य का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप
- साहित्य और व्यक्तित्व का अन्त: संबंध

इकाई-4 व्यक्तित्व विकास के कारक

- व्यक्तित्व विकास में भाषा की भूमिका
- व्यक्तित्व विकास में साहित्य की भूमिका
- व्यक्तित्व विकास में फिल्मों की भूमिका

इकाई-5 व्यक्तित्व विकास के विविध आयाम

- विविध आयाम – शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक
- सकारात्मक और विकासशील व्यक्तित्त्व

संभावित पुस्तक:

1. प्रेमचंद – साहित्य का उद्देश्य, साहित्य सरोवर प्रकाशन, आगरा
2. (सं.) विनोद तिवारी- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के श्रेष्ठ निबंध, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
3. धर्मवीर भारती- मानव मूल्य और साहित्य, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
4. रामविलास शर्मा- परम्परा का मूल्यांकन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

हिंदी विभाग

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अधीन स्थापित)
धर्मशाला,जिला-कांगड़ा,हिमाचल प्रदेश-176215
www.cuhimachal.ac.in

पाठ्यक्रम शीर्षक : साहित्य और मानव मूल्य

पाठ्यक्रम कूट-संकेत : एच.आई.एल. 458 (HIL 458) **श्रेय - 02**

श्रेय तुल्यमान : [एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे के बराबर, प्रयोगशाला / व्यावहारिक कार्य / ट्युटोरियल / शिक्षक नियंत्रित गतिविधियाँ के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित अनिवार्य / वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध-पत्र लेखन, सेमीनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के 15 घंटे के सामान हैं]

पाठ्यक्रम का उद्देश्य:

* साहित्य के मूल्यगत पक्ष को उद्घाटित करना |
*विद्यार्थियों को साहित्य और उसके विभिन्न पक्षों से अवगत कराना |
* कहानी, कविता, नाटक आदि के पाठ विश्लेषण पर बल |

पाठ्यक्रम परिणाम (co) – इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद विद्यार्थियों में निम्नलिखित क्षमता का विकास होगा -

*मूल्य आधारित प्रोत्साहन
*साहित्य के पाठ की समझ का विकास |
*साहित्यिक बोध में अभिवृद्धि |
*संवेदनात्मक अनुभूति का विकास |
* सामाजिक अवस्थिति का ज्ञान |

उपस्थिति अनिवार्यता : पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज न होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जासकता है |

मूल्यांकन मापदंड : 1. मध्यावधि परीक्षा - 20%

2.सत्रांत परीक्षा - 60%

3. सतत आतंरिक मूल्यांकन - 20 % (100 अंक में 20 अंक)

पाठ्यक्रम विषयवस्तु –

इकाई 1 : मानवीय मूल्य : अर्थ एवं स्वरूप

क. मानवीय मूल्य : एक परिचय

ख. मूल्य का अर्थ, परिभाषा, एवं विशेषताएँ

ग. मूल्यों के स्रोत : सांस्कृतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक और संवैधानिक

इकाई 2: मानवीय मूल्यों का वर्गीकरण

क. मूल्यों के प्रकार

ख. मानव मूल्यों की शिक्षा की आवश्यकता

ग. पाँच सार्वभौमिक मूल्य : सत्य, सदाचार, शान्ति, प्रेम, अहिंसा

इकाई 3: हिन्दी कथा साहित्य एवं मानवीय मूल्य

क. उसने कहा था –चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

ख. पुरस्कार- जयशंकर प्रसाद

ग. वापसी – उषा प्रियम्वदा

इकाई-4: हिन्दी काव्य में मानवीय मूल्य

क. ग़ज़ल में मानवीय मूल्य (साए में धूप-दुष्यन्त कुमार)

ख. हिन्दी कविता में मानवीय मूल्य (श्रद्धा सर्ग (कामायनी)-जयशंकर प्रसाद)

इकाई -5 : नाटक एवं एकांकी में मानव मूल्य

क. अंधेर नगरी – भारतेंदु हरिश्चन्द्र

ख. सिपाही की माँ : मोहन राकेश

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

मानविकी एवं भाषा संकाय

हिन्दी विभाग

पाठ्यक्रम शीर्षक : हिंदी का लोकप्रिय साहित्य

पाठ्यक्रम कूट संकेत- एच.आई.एल. 450 (HIL 450) **श्रेय तुल्यमान:** 2 श्रेय (1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य: पाठ्यक्रम का लक्ष्य विद्यार्थियों को हिन्दी के लोकप्रिय साहित्य से परिचित कराना है | जिन विद्यार्थियों की अभिरुचि हिन्दी के लोकप्रिय साहित्य में है,उन्हें हिन्दी की लोकप्रिय कहानियों,उपन्यासों एवं मंचीय कविता की समृद्ध परम्परा से वाकिफ कराना इस 'यूनिवर्सिटी वाईड' पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य है |

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcome) – इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद विद्यार्थियों में निम्नलिखित क्षमता का विकास होगा -

*हिंदी लोक से विद्यार्थियों का परिचय कराना |
*हिंदी के लोकप्रिय साहित्य से परिचय |
*हिंदी के लोकप्रिय साहित्य के पाठ की समझ का विकास |
*साहित्यिक-बोध में अभिवृद्धि |
*संवेदनात्मक अनुभूति का विकास |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्जा ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड :

क) मध्यावधि परीक्षा -	25%
ख) सत्रांत परीक्षा -	50%
ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन -	25%

*पुस्तकालय कार्य -	5%
*प्रायोगिक कार्य -	5%
*गृह-कार्य -	5%
* कक्षा परीक्षा -	5%
*कक्षा-प्रस्तुतियां	5%

पाठ्यक्रम विषयवस्तु –

इकाई-1 लोकप्रिय साहित्य : अवधारणा एवं विकास (4 घंटे)

क) लोक का अर्थ एवं स्वरूप,शास्त्र एवं लोक में अंतर

ख) लोक साहित्य की अवधारणा,लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति

ग) हिन्दी के लोकप्रिय साहित्य का विकास

इकाई-2 हिन्दी का प्रारंभिक लोकप्रिय साहित्य (4 घंटे)

क) देवकीनंदन खत्री कृत चन्द्रकान्ता का आलोचनात्मक अध्ययन
(सन्दर्भ- चन्द्रकान्ता का पहला अध्याय)

ख) गोपाल राम गहमरी की कहानी का आलोचनात्मक अध्ययन

ग) प्रेमचंद की कफन कहानी का आलोचनात्मक अध्ययन

इकाई-3 हिन्दी का उत्तरोत्तर लोकप्रिय कथा साहित्य (4 घंटे)

क) इब्ने सफी के उपन्यास का अध्ययन

ख) वेदप्रकाश शर्मा के उपन्यास का अध्ययन

ग) धर्मवीर भारती के उपन्यास का अध्ययन

इकाई-4 हिन्दी के प्रमुख लोकप्रिय गीतकार एवं उनके गीत (3 घंटे)

क) हरिवंशराय 'बच्चन'

ख) गोपाल सिंह 'नेपाली'

ग) गोपालदास 'नीरज'

इकाई-5 हिन्दी के प्रमुख लोकप्रिय ग़ज़लकार एवं उनकी ग़ज़लें (5 घंटे)

क) शमशेर बहादुर सिंह

ख) दुष्यंत कुमार

ग) गोपालदास 'नीरज'

घ) कुँअर बेचैन

आधार ग्रन्थ :

1 .डा. विष्णु सक्सेना (संपादन) लोकप्रियता के शिखर गीत, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई-दिल्ली,पहला संस्करण: 2013

2. डॉ. सुरेश कुमार जैन (संपादन) काव्य कल्पद्रुम, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली-110002 संस्करण:2008,2009

3.रंजना अरगड़े (सम्पादन) सुकून की तलाश

4.दुष्यंत कुमार 'साये में धूप',

5.गोपालदास 'नीरज' 'नीरज की पाती'

6.कुँअर बेचैन शामयाने कांच के

सन्दर्भ ग्रन्थ :

10. डॉ.सी. वसंता गीतकार नीरज,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली-110002

11.डा. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी (संपादन) बीसवीं सदी का हिन्दी साहित्य,भारतीय ज्ञानपीठ,दिल्ली

12. डॉ. नरेश हिन्दी ग़ज़ल : दशा और दिशा,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली-110002

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

मानविकी एवं भाषा संकाय

हिन्दी विभाग

पाठ्यक्रम शीर्षक : हिंदी का लोकप्रिय साहित्य

पाठ्यक्रम कूट संकेत- एच.आई.एल. 450 (HIL 450) **श्रेय तुल्यमान:** 2 श्रेय (1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य: पाठ्यक्रम का लक्ष्य विद्यार्थियों को हिन्दी के लोकप्रिय साहित्य से परिचित कराना है | जिन विद्यार्थियों की अभिरुचि हिन्दी के लोकप्रिय साहित्य में है,उन्हें हिन्दी की लोकप्रिय कहानियों,उपन्यासों एवं मंचीय कविता की समृद्ध परम्परा से वाकिफ कराना इस 'यूनिवर्सिटी वाईड' पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य है |

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcome) – इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद विद्यार्थियों में निम्नलिखित क्षमता का विकास होगा -

*हिंदी लोक से विद्यार्थियों का परिचय कराना |
*हिंदी के लोकप्रिय साहित्य से परिचय |
*हिंदी के लोकप्रिय साहित्य के पाठ की समझ का विकास |
*साहित्यिक-बोध में अभिवृद्धि |
*संवेदनात्मक अनुभूति का विकास |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्जा ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड : क) मध्यावधि परीक्षा - 25%

ख) सत्रांत परीक्षा - 50%

ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन - 25%

*पुस्तकालय कार्य -	5%
*प्रायोगिक कार्य -	5%
*गृह-कार्य -	5%
* कक्षा परीक्षा -	5%
*कक्षा-प्रस्तुतियां	5%

पाठ्यक्रम विषयवस्तु –

इकाई-1 लोकप्रिय साहित्य : अवधारणा एवं विकास (4 घंटे)

क) लोक का अर्थ एवं स्वरूप,शास्त्र एवं लोक में अंतर

ख) लोक साहित्य की अवधारणा,लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति

ग) हिन्दी के लोकप्रिय साहित्य का विकास

इकाई-2 हिन्दी का प्रारंभिक लोकप्रिय साहित्य (4 घंटे)

क) देवकीनंदन खत्री कृत चन्द्रकान्ता का आलोचनात्मक अध्ययन
(सन्दर्भ- चन्द्रकान्ता का पहला अध्याय)

ख) गोपाल राम गहमरी की कहानी का आलोचनात्मक अध्ययन

ग) प्रेमचंद की कफन कहानी का आलोचनात्मक अध्ययन

इकाई-3 हिन्दी का उत्तरोत्तर लोकप्रिय कथा साहित्य (4 घंटे)

क) इब्ने सफी के उपन्यास का अध्ययन

ख) वेदप्रकाश शर्मा के उपन्यास का अध्ययन

ग) धर्मवीर भारती के उपन्यास का अध्ययन

इकाई-4 हिन्दी के प्रमुख लोकप्रिय गीतकार एवं उनके गीत (3 घंटे)

क) हरिवंशराय 'बच्चन'

ख) गोपाल सिंह 'नेपाली'

ग) गोपालदास 'नीरज'

इकाई-5 हिन्दी के प्रमुख लोकप्रिय ग़ज़लकार एवं उनकी ग़ज़लें (5 घंटे)

क) शमशेर बहादुर सिंह

ख) दुष्यंत कुमार

ग) गोपालदास 'नीरज'

घ) कुँअर बेचैन

आधार ग्रन्थ :

1 .डा. विष्णु सक्सेना (संपादन) लोकप्रियता के शिखर गीत, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई-दिल्ली,पहला संस्करण: 2013

2. डॉ. सुरेश कुमार जैन (संपादन) काव्य कल्पद्रुम, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली-110002 संस्करण:2008,2009

3.रंजना अरगड़े (सम्पादन) सुकून की तलाश

4.दुष्यंत कुमार 'साये में धूप',

5.गोपालदास 'नीरज' 'नीरज की पाती'

6.कुँअर बेचैन शामयाने कांच के

सन्दर्भ ग्रन्थ :

10. डॉ.सी. वसंता गीतकार नीरज,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली-110002

11.डा. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी (संपादन) बीसवीं सदी का हिन्दी साहित्य,भारतीय ज्ञानपीठ,दिल्ली

12. डॉ. नरेश हिन्दी ग़ज़ल : दशा और दिशा,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली-110002